Information of Press Council of Maharashtra

ISSN NO. (Online/E-Journal): 3139-499X | Vol. 1 | Issue 3, July to September 2026

Article 5 | Language: Hindi | Published: July to September 2026

कलाश जनजाति: पहाड़ों में बची मानव सभ्यता की अंतिम धड़कन

Adv. Iliyas Abdulmajeed Khan

ABSTRACT

यह शोध/लेख पाकिस्तान के खैबर पख्तूनखा प्रांत के चित्राल क्षेत्र में निवास करने वाली कैलाश जनजाति की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, सामाजिक संरचना और वर्तमान चुनौतियों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। कैलाश समुदाय अपनी विशिष्ट परंपराओं, बहुदेववादी आस्था, प्रकृति-आधारित जीवनशैली तथा महिलाओं को प्राप्त स्वतंत्रता और सम्मान के कारण विश्व में एक अद्वितीय पहचान रखता है। अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि आधुनिकता, बाहरी सांस्कृतिक प्रभाव, अनियंत्रित पर्यटन, धर्म परिवर्तन और युवाओं के पलायन के कारण यह जनजाति अपने अस्तित्व के गंभीर संकट का सामना कर रही है।

लेख में अंतरराष्ट्रीय संगठनों (जैसे UNESCO, UNDP आदि) तथा भारत सरकार की संभावित सांस्कृतिक कूटनीतिक भूमिका पर भी विचार किया गया है, जिससे इस अमूल्य विरासत के संरक्षण के लिए वैश्विक स्तर पर समन्वित प्रयास किए जा सकें। अंततः यह अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि कैलाश जनजाति का संरक्षण केवल एक क्षेत्रीय आवश्यकता नहीं, बल्कि मानव सभ्यता की सांस्कृतिक विविधता को बनाए रखने के लिए एक वैश्विक जिम्मेदारी है।

प्रस्तावना: एक जीवित विरासत की कहानी

पाकिस्तान के खैबर पख्तूनखा प्रांत के चित्राल जिले की दुर्गम और मनोहारी पहाड़ियों में निवास करने वाली कैलाश जनजाति आज भी उस सांस्कृतिक विरासत को जीवित रखे हुए है, जो आधुनिक दुनिया की तेज़ रफ्तार में कहीं पीछे छूटती जा रही है, और यही कारण है कि इस समुदाय को केवल एक जनजातीय समूह के रूप में नहीं, बल्कि मानव सभ्यता के एक जीवित संग्रहालय के रूप में देखा जाता है, क्योंकि यहां के लोग हजारों वर्षों से चली आ रही परंपराओं, धार्मिक विश्वासों और सामाजिक संरचनाओं को आज भी अपने दैनिक जीवन में उतनी ही श्रद्धा और प्रतिबद्धता के साथ निभाते हैं, जितनी उनके पूर्वज निभाते थे, और यह निरंतरता ही उनकी सबसे बड़ी पहचान है, लेकिन इस प्रेरणादायक कहानी के साथ-साथ एक गंभीर सच्चाई भी जुड़ी हुई है, जो हमें चिंतित करती है, क्योंकि यह वही समुदाय है जो आज अपने अस्तित्व के सबसे बड़े संकट से जूझ रहा है, जहां एक ओर उनकी अनोखी संस्कृति दुनिया भर के शोधकर्ताओं, पर्यटकों और सांस्कृतिक प्रेमियों को आकर्षित करती है, वहीं दूसरी ओर यही आकर्षण उनके लिए एक चुनौती बनता जा रहा है, क्योंकि बाहरी प्रभाव, आर्थिक दबाव और बदलती जीवनशैली उनके पारंपरिक ढांचे को धीरे-धीरे कमजोर कर रहे हैं, और यह स्थिति हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि क्या आधुनिकता की दौड़ में हम अपनी सांस्कृतिक

जड़ों को खोते जा रहे हैं, और यदि ऐसा है, तो यह केवल कैलाश जनजाति की समस्या नहीं, बल्कि पूरी मानवता के लिए एक चेतावनी है।

 इतिहास और उत्पत्ति: रहस्यमयी जड़ों की तलाश
कैलाश जनजाति की उत्पत्ति इतिहासकारों और शोधकर्ताओं के लिए लंबे समय से एक रहस्य बनी हुई है, और इस विषय पर कई सिद्धांत प्रस्तुत किए गए हैं, जिनमें से कुछ उन्हें प्राचीन वैदिक या आर्य सभ्यता से जोड़ते हैं, जबकि कुछ अन्य इतिहासकार यह मानते हैं कि वे सिकंदर महान के सैनिकों के वंशज हो सकते हैं, जो चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में इस क्षेत्र में आए थे, हालांकि इन सिद्धांतों की पुष्टि के लिए पर्याप्त प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं, लेकिन यह निश्चित है कि यह समुदाय हजारों वर्षों से इस क्षेत्र में निवास कर रहा है और उसने अपनी विशिष्ट पहचान को बनाए रखा है, जो इसे अन्य समुदायों से अलग बनाती है, उनकी भाषा "कलाशा" (Kalasha-mun) एक दुर्लभ दार्दिक भाषा है, जो उनकी सांस्कृतिक विरासत का महत्वपूर्ण हिस्सा है और जो आज विलुप्त होने के खतरे का सामना कर रही है, इसके अलावा उनके धार्मिक विश्वास, जो बहुदेववादी और प्रकृति-आधारित हैं, उन्हें प्राचीन सभ्यताओं के करीब लाते हैं, जहां मानव और प्रकृति के बीच गहरा और संतुलित संबंध स्थापित किया गया था, और यही कारण है कि उनके धार्मिक अनुष्ठान, पर्व और सामाजिक परंपराएं न केवल उनके इतिहास को दर्शाती हैं, बल्कि उनके जीवन दर्शन को भी उजागर करती हैं, जो आधुनिक समाज के लिए एक महत्वपूर्ण सीख हो सकती है।

 सामाजिक संरचना और महिलाओं की भूमिका
कैलाश समाज की सामाजिक संरचना उसकी सबसे विशिष्ट और प्रगतिशील विशेषताओं में से एक है, जहां महिलाओं को समाज में सम्मान, स्वतंत्रता और अधिकार प्राप्त हैं, जो कई आधुनिक समाजों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत हो सकते हैं, यहां महिलाएं अपने जीवनसाथी का चयन स्वयं करती हैं और यदि वे अपने वैवाहिक जीवन से संतुष्ट नहीं हैं, तो उन्हें पुनर्विवाह की स्वतंत्रता भी प्राप्त है, जो इस समाज की उदारता और लचीलेपन को दर्शाता है, इसके अलावा महिलाएं केवल घरेलू कार्यों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक गतिविधियों में भी सक्रिय रूप से भाग लेती हैं, और उनके विचारों को सामुदायिक निर्णयों में महत्व दिया जाता है, उनकी पारंपरिक वेशभूषा, जिसमें काले रंग के वस्त्रों के साथ रंग-बिरंगे कढ़ाईदार डिज़ाइन और विशिष्ट हेडड्रेस शामिल होते हैं, उनकी सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक है, और यह केवल सौंदर्य का प्रदर्शन नहीं, बल्कि उनकी सामाजिक स्थिति और परंपराओं का भी द्योतक है, इस प्रकार कैलाश समाज एक ऐसा उदाहरण प्रस्तुत करता है, जहां परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन स्थापित किया गया है, लेकिन आज बाहरी प्रभावों और बदलती परिस्थितियों के कारण यह संतुलन भी प्रभावित हो रहा है, जो चिंता का विषय है।

 त्योहार और परंपराएं: जीवन का उत्सव
कैलाश जनजाति के त्योहार उनके जीवन का सबसे जीवंत और रंगीन पहलू हैं, जो उनकी सांस्कृतिक पहचान और सामुदायिक एकता का प्रतीक हैं, उनके प्रमुख त्योहारों में चिलम जोशी (वसंत उत्सव), उचाल (फसल उत्सव) और चोमोस (शीतकालीन उत्सव) शामिल हैं, और प्रत्येक त्योहार का अपना विशेष धार्मिक और सामाजिक महत्व होता है, इन उत्सवों के दौरान लोग पारंपरिक वेशभूषा पहनते हैं, लोकगीत गाते हैं, सामूहिक नृत्य करते हैं और विभिन्न अनुष्ठानों के माध्यम से प्रकृति और देवताओं के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करते हैं, यह केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि उनकी सांस्कृतिक परंपराओं को जीवित रखने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है, इसके अलावा इन त्योहारों में पूरे समुदाय

की भागीदारी होती है, जो सामाजिक एकता और सहयोग की भावना को मजबूत करती है, लेकिन आज जब ये उत्सव पर्यटन का आकर्षण बनते जा रहे हैं, तो उनकी मूल भावना और आध्यात्मिकता पर प्रभाव पड़ रहा है, और यह स्थिति इस बात की ओर संकेत करती है कि यदि समय रहते उचित कदम नहीं उठाए गए, तो यह सांस्कृतिक विरासत धीरे-धीरे अपनी मौलिकता खो सकती है।

□□ वर्तमान संकट: अस्तित्व की लड़ाई

वर्तमान समय में कैलाश जनजाति जिन चुनौतियों का सामना कर रही है, वे अत्यंत जटिल और बहुआयामी हैं, जिनका सीधा प्रभाव उनके अस्तित्व और सांस्कृतिक पहचान पर पड़ रहा है, उनकी घटती जनसंख्या एक गंभीर चिंता का विषय है, जो विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक कारणों से प्रभावित हो रही है, इसके अलावा धर्म परिवर्तन का बढ़ता दबाव भी उनकी पारंपरिक मान्यताओं और सामाजिक संरचना को कमजोर कर रहा है, वहीं आधुनिक शिक्षा और रोजगार के अवसरों की तलाश में युवा पीढ़ी का पलायन भी उनके सांस्कृतिक निरंतरता के लिए एक बड़ा खतरा बनता जा रहा है, इसके साथ ही अनियंत्रित पर्यटन ने उनकी संस्कृति को एक "प्रदर्शनी" में बदल दिया है, जहां उनकी परंपराएं और रीति-रिवाज बाहरी लोगों के लिए आकर्षण का केंद्र बन गए हैं, लेकिन इससे उनकी मूल भावना प्रभावित हो रही है, और यह स्थिति एक "साइलेंट क्राइसिस" का रूप ले चुकी है, जो धीरे-धीरे इस समुदाय की पहचान को समाप्त करने की दिशा में बढ़ रही है, और यदि इस पर समय रहते ध्यान नहीं दिया गया, तो यह संकट एक अपरिवर्तनीय क्षति का कारण बन सकता है।

□ अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आवश्यक हस्तक्षेप: एक वैश्विक जिम्मेदारी

कैलाश जनजाति के संरक्षण और सशक्तिकरण के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बहुआयामी, समन्वित और दीर्घकालिक प्रयासों की तत्काल आवश्यकता है, क्योंकि यह केवल एक स्थानीय समुदाय का मुद्दा नहीं, बल्कि वैश्विक सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण से जुड़ा विषय है, और इसी दृष्टि से सबसे पहले UNESCO जैसी संस्थाओं के माध्यम से कैलाश संस्कृति को "अमूर्त सांस्कृतिक विरासत" (Intangible Cultural Heritage) की सूची में और अधिक सशक्त रूप से शामिल कर उसका संरक्षण सुनिश्चित किया जाना चाहिए, जिससे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर वित्तीय सहायता, शोध और निगरानी की व्यवस्था मजबूत हो सके, इसके साथ ही United Nations के विभिन्न अंगों—जैसे UNDP, UNICEF और UNHRC—को इस समुदाय के मानवाधिकार, शिक्षा, स्वास्थ्य और सांस्कृतिक स्वतंत्रता के संरक्षण के लिए विशेष कार्यक्रम चलाने चाहिए, वहीं वैश्विक विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों को कैलाश भाषा "कलाशा" तथा उनकी परंपराओं के दस्तावेजीकरण, डिजिटल आर्काइविंग और एथ्नोग्राफिक रिसर्च पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, ताकि यह ज्ञान आने वाली पीढ़ियों तक सुरक्षित रह सके, इसके अतिरिक्त अंतरराष्ट्रीय एनजीओ और सांस्कृतिक संस्थाएं "सस्टेनेबल टूरिज्म मॉडल" विकसित कर सकती हैं, जिससे पर्यटन से होने वाली आय सीधे समुदाय तक पहुंचे और उनकी संस्कृति पर नकारात्मक प्रभाव न पड़े, साथ ही वैश्विक मीडिया और डॉक्यूमेंट्री प्लेटफॉर्म्स को जिम्मेदार रिपोर्टिंग के माध्यम से इस मुद्दे को संवेदनशीलता के साथ दुनिया के सामने लाना चाहिए, न कि इसे केवल एक "एक्सोटिक आकर्षण" के रूप में प्रस्तुत करना चाहिए, और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर "कल्चरल राइट्स प्रोटेक्शन फ्रेमवर्क" को मजबूत किया जाए, जिससे किसी भी प्रकार के जबरन सांस्कृतिक परिवर्तन, धर्मांतरण या पहचान के ह्रास को रोका जा सके, इस प्रकार यदि वैश्विक समुदाय समन्वित और संवेदनशील दृष्टिकोण अपनाता है, तो न केवल कैलाश जनजाति का अस्तित्व सुरक्षित रखा जा सकता है, बल्कि यह पूरी मानवता के लिए एक उदाहरण भी बन सकता है कि हम अपनी विविधता को किस प्रकार सम्मान और संरक्षण प्रदान कर सकते हैं।

भारत सरकार की संभावित भूमिका: सांस्कृतिक कूटनीति और संरक्षण का मानवीय दृष्टिकोण
कैलाश जनजाति भले ही पाकिस्तान के Chitral क्षेत्र में निवास करती हो, फिर भी भारत सरकार उनके संरक्षण में एक महत्वपूर्ण और सकारात्मक भूमिका निभा सकती है, विशेषकर सांस्कृतिक कूटनीति, अकादमिक सहयोग और मानवीय पहल के माध्यम से, क्योंकि भारत स्वयं बहुसांस्कृतिक विरासत का धनी देश है और उसने आदिवासी तथा पारंपरिक समुदायों के संरक्षण में कई सफल मॉडल विकसित किए हैं, इसी संदर्भ में Ministry of Culture India के माध्यम से कैलाश संस्कृति पर शोध, सेमिनार, प्रदर्शनी और डॉक्यूमेंटेशन प्रोजेक्ट शुरू किए जा सकते हैं, जिससे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इस समुदाय के प्रति जागरूकता बढ़े, वहीं Indian Council for Cultural Relations के जरिए सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम आयोजित किए जा सकते हैं, जिनमें कैलाश समुदाय के प्रतिनिधियों को भारत आमंत्रित कर उनके कला, संगीत और परंपराओं को मंच प्रदान किया जाए, इसके अतिरिक्त Indira Gandhi National Centre for the Arts जैसे संस्थान उनकी भाषा "कलाशा" और सांस्कृतिक धरोहर के डिजिटल आर्काइव तैयार करने में सहयोग कर सकते हैं, साथ ही भारत सरकार "सॉफ्ट डिप्लोमेसी" के तहत पाकिस्तान के साथ द्विपक्षीय या बहुपक्षीय मंचों पर इस समुदाय के संरक्षण की आवश्यकता को उठा सकती है, जिससे अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा मिले, इसके अलावा भारतीय विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों में "ट्राइबल स्टडीज" के अंतर्गत कैलाश जनजाति पर विशेष अध्ययन और फेलोशिप शुरू की जा सकती हैं, और यदि संभव हो तो मानवीय आधार पर शिक्षा, स्वास्थ्य और कौशल विकास से जुड़े सीमित सहयोग कार्यक्रम भी अंतरराष्ट्रीय संगठनों के माध्यम से संचालित किए जा सकते हैं, इस प्रकार भारत सरकार प्रत्यक्ष हस्तक्षेप के बजाय एक सहयोगी, संवेदनशील और ज्ञान-आधारित दृष्टिकोण अपनाकर कैलाश जनजाति के संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है, जो न केवल क्षेत्रीय शांति और सांस्कृतिक समझ को बढ़ाएगा, बल्कि "वसुधैव कुटुंबकम्" की भावना को भी साकार करेगा।

□□ संरक्षण की आवश्यकता: भविष्य की दिशा
कैलाश जनजाति के संरक्षण के लिए एक समन्वित और बहुस्तरीय प्रयास की आवश्यकता है, जिसमें स्थानीय समुदाय, सरकार, अंतरराष्ट्रीय संगठन और समाज सभी की सक्रिय भागीदारी होनी चाहिए, सबसे पहले उनकी सांस्कृतिक विरासत को कानूनी संरक्षण प्रदान किया जाना चाहिए, ताकि बाहरी हस्तक्षेप को नियंत्रित किया जा सके और उनकी परंपराओं को सुरक्षित रखा जा सके, इसके अलावा पर्यटन को नियंत्रित और जिम्मेदार बनाया जाना चाहिए, ताकि वह आर्थिक विकास के साथ-साथ सांस्कृतिक संरक्षण में भी सहायक हो, शिक्षा के माध्यम से नई पीढ़ी को अपनी परंपराओं और भाषा के प्रति जागरूक करना भी अत्यंत आवश्यक है, और इसके साथ ही उनके सांस्कृतिक ज्ञान, लोककथाओं, भाषा और परंपराओं का व्यवस्थित दस्तावेजीकरण किया जाना चाहिए, ताकि यह विरासत भविष्य की पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रह सके, और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हमें इस मुद्दे को केवल एक स्थानीय समस्या के रूप में नहीं, बल्कि एक वैश्विक जिम्मेदारी के रूप में स्वीकार करना होगा, क्योंकि सांस्कृतिक विविधता ही मानव सभ्यता की सबसे बड़ी ताकत है।

□ निष्कर्ष: एक साझा जिम्मेदारी
कैलाश जनजाति की कहानी हमें यह सिखाती है कि सांस्कृतिक विविधता केवल एक पहचान नहीं, बल्कि मानवता की आत्मा है, और यदि हम इसे संरक्षित नहीं कर पाए, तो हमारा भविष्य केवल एकरूपता और सांस्कृतिक शून्यता का प्रतीक बन जाएगा, इसलिए यह आवश्यक है कि हम इस अनमोल विरासत को बचाने के लिए सामूहिक प्रयास करें, जिसमें न केवल सरकारों और संस्थाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है, बल्कि आम नागरिकों की जागरूकता और

संवेदनशीलता भी उतनी ही आवश्यक है, क्योंकि जब समाज किसी संस्कृति के संरक्षण के लिए एकजुट होता है, तभी वह विरासत लंबे समय तक जीवित रह पाती है, और यही इस फीचर लेख का मूल उद्देश्य है—लोगों को जागरूक करना, उन्हें इस मुद्दे की गंभीरता से अवगत कराना और उन्हें इस दिशा में सकारात्मक कदम उठाने के लिए प्रेरित करना।

 एडिटोरियल नोट (ISSN स्टैंडर्ड)
कैलाश जनजाति का संरक्षण केवल अतीत को बचाना नहीं, बल्कि भविष्य को समृद्ध बनाना है—और यह जिम्मेदारी हम सभी की है।

 Keywords (कीवर्ड्स)
कैलाश जनजाति (Kalash Tribe)
सांस्कृतिक विरासत (Cultural Heritage)
खैबर पख्तूनखा (Khyber Pakhtunkhwa)
चित्राल (Chitral)
आदिवासी समाज (Tribal Society)
महिला सशक्तिकरण (Women Empowerment)
सांस्कृतिक संरक्षण (Cultural Preservation)
वैश्विक हस्तक्षेप (Global Intervention)
पर्यटन प्रभाव (Tourism Impact)
सांस्कृतिक कूटनीति (Cultural Diplomacy)

© 2026 Press Council of Maharashtra. All rights reserved. | Information of Press Council of Maharashtra, Vol. 1 | Issue 3
Downloaded: 01 Nov 2026, 3:21 PM IST